महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार

(संसद के अधिनियम द्वारा स्थापित केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

डॉ0 अम्बेडकर प्रशासनिक भवन, रघुनाथपुर, मोतिहारी – 845 401, जिला– पूर्वी चम्पारण, बिहार

'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की कार्ययोजना' विषय पर
समवेत–संवाद परिवार (अनौपचारिक विमर्श)
का गहन विचार–विमर्श युक्त एक दिवसीय ई–विचार–गोष्ठी का

प्रतिवेदन

1. **'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की कार्ययोजना'** के क्रियान्वयन की रूपरेखा, संचालन तथा उच्च शिक्षा के पुनर्गठन से संबंधित विचार–विमर्श हेतु **समवेत–संवाद (परिवार) अनौपचारिक विमर्श** का **एक दिवसीय ई–विचार–गोष्ठी** का आयोजन दिनांक **6 अगस्त 2020, गुरुवार (अपराह्न 04:30 बजे)** को महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी, बिहार के माननीय कुलपति प्रो0 संजीव कुमार शर्मा की अध्यक्षता में संपन्न हुई।

2. प्रस्तुत विचार–गोष्ठी में प्रख्यात शिक्षाविद् तथा शैक्षणिक प्रशासकों ने भाग लिया। प्रस्तुत वक्ताओं के नाम इस प्रकार हैं :

    1. **प्रो0 रमा शंकर दुबे**, कुलपति, गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय, गाँधीनगर (गुजरात)
    2. **प्रो0 राज कुमार,** कुलपति, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़
    3. **प्रो0 श्री प्रकाश मणि त्रिपाठी,** कुलपति, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजाति विश्वविद्यालय, अमरकण्टक (मध्य प्रदेश)
    4. **प्रो0 एस0 के0 श्रीवास्तव,** कुलपति, पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग (मेघालय)
    5. **प्रो0 संजीव कुमार शर्मा,** कुलपति, महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी (बिहार)
    6. **प्रो0 दीपक श्रीवास्तव,** भारतीय प्रबंध संस्थान, तिरूचिरापल्ली (तमिलनाडु)
    7. **प्रो0 राम मोहन पाठक,** पूर्व कुलपति, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, चेन्नई (तमिलनाडु)
    8. **प्रो0 मंजुला राणा,** आचार्य एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, हेमवती नन्दन बहुगुणा (केन्द्रीय) गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर (उत्तराखण्ड)

3. इन प्रख्यात वक्ताओं के अलावा, प्रो. पवनेश कुमार, संकायाध्यक्ष, वाणिज्य और प्रबंधन विज्ञान संकाय, महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी (बिहार) की भी उपस्थिति रही।

4. विचार–गोष्ठी के आरम्भ में प्रो0 संजीव कुमार शर्मा, कुलपति, महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी, बिहार ने सभी समवेत–संवाद परिवार के सदस्यों/वक्ताओं का अभिनंदन किया एवं उनके कोरोनाकाल के संकट के समय में सबके स्वस्थ रहने की कामना करते हुए एवं सबको शुभकामनायें देते हुए कार्यक्रम को प्रारम्भ किया। उन्होंने 17 जुलाई 2019 को **'राष्ट्रीय शिक्षा नीति'** के विषय में महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी, बिहार द्वारा आयोजित सेमिनार के सन्दर्भ में सभी को अवगत कराया। प्रो0 शर्मा ने प्रो0 रमा शंकर दूबे को उनके लेख के लिए बधाई दी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 विषय में अनौपचारिक विमर्श हेतु प्रो0 संजीव कुमार शर्मा ने सभी समवेत परिवार के सदस्यों को अपने–अपने विचार रखने के लिए आमन्त्रित किया।

5. इस ई–विचार–गोष्ठी–सह गहन विचार–विमर्श सत्र के कुछ प्रमुख अंश निम्नवत हैं–

1. **प्रो0 रमाशंकर दुबे, कुलपति, गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय, गाँधीनगर (गुजरात)**

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एक क्रान्तिकारी एवं अति प्रशंसनीय नीति है। प्रस्तुत नीति में शिक्षित होने के अर्थ को आन्तरिक शक्तियों के विकास से रेखांकित गया है। वस्तुतः इस नीति में मातृभाषा शिक्षण को प्राथमिकता दी गई है। यह नीति ज्ञान सम्बन्धी चुनौतियों से निपटने में समर्थ है। भाषा के सामर्थ्य को कक्षा पाँच तक/स्थानीय भाषा को विशेष बल दिया गया है। कक्षा आठ तक भारतीय भाषाओं को पठन–पाठन में चुनने का प्रावधान है। पुरातन भारतीय शिक्षा व्यवस्था में देवभाषा संस्कृत के साथ ही साथ भारतीय भाषाओं का प्रावधान किया गया गया है। इस बात को रेखांकित करना आवश्यक है कि भाषा ही अभिव्यक्ति/संस्कृति का संवाहक है। मौलिक चिंतन को मातृभाषा में ही प्राप्त किया जा सकता है। भाषा ही उन्नति का आधार है। विश्व–गुरु बनने के संकल्पाधीन अपनी मातृभषा में शिक्षण का प्रमाण तक्षशिला, नालन्दा विश्वविद्यालयों के पठन–पाठन में मिलता है। प्रतीचि–प्राची के मेल को सुनिश्चित करते हुए आज के वर्तमान समय में वैश्विक चुनौतियों से निपटने के लिए सतत् मूल्यांकन, चारित्रिक मूल्यों का विकास, कौशल युक्त पाठ्यक्रम, शोध–शिक्षण एवं डिग्री प्रदान करने वाले महाविद्यालयों को एक साथ लेते हुए गुणवत्ता युक्त शोध सुनिश्चित करना है। एन0आर0एफ0 के माध्यम से न सिर्फ वैज्ञानिक विषयों में अपितु मानवीय जीवन से जुड़े मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विषयों में भी गुणात्मक शोध को सुनिश्चित करना है। नियामक के रूप में यू0जी0सी0, ए0आई0सी0टी0ई0, टीचर एजूकेशन एवं गवर्नमेंट/प्राइवेट विश्वविद्यालयों को इसके अधीन लाना एक महत्वपूर्ण निर्णय के रूप में देखा जाना चाहिए। वर्तमान चुनौतियों को देखते हुए ऑनलाइन मोड से ऑफलाइन मोड, क्रेडिट स्थानान्तरण, मल्टीपल एन्ट्री/एक्जिट से ही ज्ञान आधारित राष्ट्र के निर्माण राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 उन्मुख है।

2. **प्रो0 दीपक श्रीवास्तव, भारतीय प्रबंध संस्थान, तिरूचिरापल्ली (तमिलनाडु)**

आज वैश्विक व्यापार उद्योग पर आधारित है। ज्ञान–आधारित अर्थव्यवस्था में ग्रामीण एवं प्रतिस्पर्धात्मक अर्थव्यवस्था ही विकसित राष्ट्र का निर्माण कर सकती है। उदाहरण के तौर पर साउथ कोरिया एवं फिनलैण्ड की अर्थव्यवस्था को देखना इस दिशा में महत्वपूर्ण मानक के तौर पर तौर पर देखा जा सकता है। प्रस्तुत अर्थव्यस्था के मूल में शिक्षण की गुणवत्ता/संज्ञानात्मक क्षमता, बहुविषयक शिक्षा प्रणाली उद्यम आधारित माँगों तथा लर्निंग आउटकम परीक्षा पद्धति में सरलता/मूल्यांकन एवं प्रत्येक विश्वविद्यालय के द्वारा निर्मित एक विजिन डॉक्यूमेंट को राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अन्तर्निहित देखा जाना भविष्य की आवश्यकता है।

3. **प्रो0 एस0 के0 श्रीवास्तव, कुलपति, पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग (मेघालय)**

नई शिक्षा नीति 2020 स्वतंत्र भारत की पहली शिक्षा नीति है जो भारत केन्द्रित है। भारत के तक्षशिला/नालन्दा जैसे विश्वविद्यालयों के स्वर्णिम अतीत के देखते हुए प्रस्तुत शिक्षा नीति के अन्तर्गत पारम्परिक चिकित्सा विज्ञान, जनजातीय ज्ञान को समाहित करने की आवश्यकता है। वर्तमान शिक्षा नीति आने वाले दो दशकों के अंदर विश्वगुरु बनने की नींव रखने के लिए प्रतिबद्ध दिखती है। वर्तमान प्रासंगिक आवश्यकताओं को समझते हुए, बौद्धिक स्रोतों को एक–दूसरे से सांझा करते हुए शोध से प्राप्त ज्ञान का निर्माण ही वस्तुतः इस शिक्षा नीति के उद्देश्य में है। इस विषय पर इस बात को रेखांकित करना आवश्यक है कि वर्तमान शिक्षा नीति 2020 शिक्षण में आर्टिफिशियल ब्राउंड्री का प्रतिकार करती है। जिसके माध्यम से ज्ञान और शिक्षा का मार्ग प्रशस्त किया जा सकेगा। नियामक संस्थाओं को प्रश्नांकित करने के उद्देश्य में शिक्षण गुणवत्ता के मानदण्डों को सुनिश्चित करने के लिए आत्म–अंकुश की आवश्यकता बहुत महत्वपूर्ण होगी। साथ ही साथ इसके समीक्षात्मक आयामों को रेखांकित करते हुए यह कहना उतना ही महत्वपूर्ण है कि अध्यापकों को स्वायतत्ता की आवश्यकता क्यों होनी चाहिए? इस दिशा में प्राचीन ज्ञान पद्धति को वैज्ञानिक रूप से प्रोत्साहित करते हुए, अनुभव के साथ दक्षतापूर्ण एवं वैकल्पिक चिकित्सा विज्ञान तथा जनजातीय ज्ञान को समावेशित करने का प्रयास ही उपरोक्त प्रश्न का उत्तर है।

4. **प्रो0 राम मोहन पाठक, पूर्व कुलपति, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, चेन्नई (तमिलनाडु)**

शिक्षा को आचार्य केन्द्रित होना चाहिए। मैकॉले की शिक्षा नीति की विकृतियों को हटाकर आत्मानुशासन, आत्म–नियंत्रण के माध्यम से वास्तविक अर्थों में शिक्षा की नीति को सुनिश्चित किया जा सकता है। मातृभाषा शिक्षण के सन्दर्भ में डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद, डॉ0 भीमराव अम्बेडकर आदि ऐसे ज्वलन्त प्रमाण है जिन्होंने मातृभाषा शिक्षण के माध्यम से अपने कार्यक्षेत्र में मानवीय जीवन की ऊचाईयों को छुआ है। दक्षिण भारतीय भाषाओं सम्बन्धित से भ्रान्तियों के लिए टास्क फोर्स का गठन किया जाना चाहिए। नॉलेज इम्पॉवरर्ड सिटीजनरी (ज्ञान सशक्त नागरिकता) के माध्यम से शिक्षा के उदात्त लक्ष्य को पाना ही इस शिक्षा नीति के उद्देश्य में है और

आने वाले वर्षों में वर्तमान शिक्षा नीति के माध्यम से भारत को सशक्त आत्मनिर्भर एवं ज्ञान–आधारित राष्ट्र के रूप में संस्थापित करने में वर्तमान शिक्षा नीति प्रतिबद्ध दिखती है। अल्पसंख्यक शिक्षण संस्थानों को मुख्य धारा में जोड़ते हुए समग्र व्यक्तित्व विकास का सुनिश्चियन आवश्यक है साथ ही साथ वर्तमान शिक्षा नीति के सन्दर्भ में आलोचनात्मक परिप्रेक्ष्य/फीडबैक के लिए जनसंचार प्रकोष्ठ का गठन नितान्त उपयोगी कदम होगा। सभी की पहुँच, सभी की भागदारी ही शिक्षा के उदात्त उद्देश्यों को प्राप्त करना ही राष्ट्रीय शिक्षा नीति के उद्देश्य में होना चाहिए।

5. **प्रो0 श्री प्रकाश मणि त्रिपाठी, कुलपति, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजाति विश्वविद्यालय, अमरकण्टक (मध्य प्रदेश)**

वर्तमान नीति व्यक्ति, समाज, राष्ट्र को पूर्णता देने वाली नीति है। इसके माध्यम से हम ग्लोबल सिटीजन तैयार होंगे एवं ग्लोबल रेंटिग के शिखर पर होंगे। यह नीति न्यायता व समावेश के भाव वाली नीति है जो नैतिकता व संवैधानिक मूल्यों पर ध्यान देती है। मल्टीपल एंट्री एवं एक्जिट एक भविष्योन्मुखी कदम है। जिसके माध्यम से नव–प्रर्वतन एवं उत्कृष्टता का भाव वर्तमान वैश्विक चुनौतियों को देखते हुए स्पष्ट दिखाई पड़ता है। प्रस्तुत नीति में व्यापक विकल्प व निरन्तर संवाद की व्यवस्था को सुनिश्चित किया गया है। आर्टिफिशियल नॉलेज से बचे और मौलिकता के दायरे में रहे। इस सन्दर्भ में यह समझना आवश्यक होगा कि उच्च शिक्षा के माध्यम से ही उच्चता की प्राप्ति होती है एवं मनुष्य अन्तर्निहित उदात्त, समर्थ, सम्पन्न, सभ्यता को प्राप्त कर सकता है। जो वर्तमान शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्य में अन्तर्निहित है। प्रगति पथ पर यदि कोई पीछे छूटा हो तो उसे भी साथ लेकर चले। स्वस्थ, स्वच्छ, सशक्त, समर्थ एवं ज्ञान आधारित समाज की रचना ही वस्तुतः वर्तमान शिक्षा नीति से हमें प्राप्त करनी है।

6. **प्रो0 मंजुला राणा, आचार्य एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, हेमवती नन्दन बहुगुणा (केन्द्रीय) गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर (उत्तराखण्ड)** तकनीकी व्यावधानों के कारण अपने विचार नहीं रख सकीं।

6. अंत में प्रो0 संजीव कुमार शर्मा, माननीय कुलपति, महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी, बिहार ने सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया और इस विमर्श से प्राप्त बिन्दुओं को संकलित कर राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अभिष्ट क्रियान्वयन के लिए संकल्पित किया।

* * * * * धन्यवाद * * * * *